बृहस्पतिवार व्रत कथा और आरती

बृहस्पतिवार व्रत की संपूर्ण कथा

प्राचीन समय में भारतवर्ष में एक प्रतापी और दानी राजा राज्य करता था। वह न्यायप्रिय था और अपनी प्रजा की सहायता करता था। वह निर्धनों को भोजन देता, जरूरतमंदों को दान करता और मंदिर जाकर भगवान के दर्शन करता था।

राजा की पत्नी का स्वभाव उससे बिल्कुल अलग था। उसे पूजा-पाठ, दान और जरूरतमंदों की सहायता करना पसंद नहीं था। उसे लगता था कि राजा धन को व्यर्थ बांट रहा है। वह अपना समय केवल सुख-सुविधा और धन की देखभाल में लगाती थी।

बृहस्पति देव साधु के रूप में आए

एक दिन राजा शिकार खेलने के लिए वन में गया हुआ था। महल में रानी और उसकी दासी थीं। उसी समय बृहस्पति देव एक साधु का रूप धारण करके महल के द्वार पर आए और भिक्षा मांगी।

रानी ने भिक्षा देने से मना कर दिया। उसने साधु से कहा, “महाराज, मैं इस धन और दान-पुण्य से परेशान हो चुकी हूं। मेरे पति हर समय धन बांटते रहते हैं। आप कोई ऐसा उपाय बताइए जिससे हमारा सारा धन समाप्त हो जाए और मुझे उसकी देखभाल न करनी पड़े।”

साधु ने रानी को समझाया, “धन से परेशान होने के बजाय उसका सदुपयोग करो। भूखों को भोजन कराओ, प्यासों के लिए जल की व्यवस्था करो, जरूरतमंद बच्चों की शिक्षा में सहायता करो और धर्म तथा लोककल्याण के कार्य करो। धन का शुभ उपयोग करने से जीवन सार्थक होता है।”

लेकिन रानी ने उनकी बात नहीं मानी और धन नष्ट करने का उपाय पूछती रही। तब साधु ने उसे गुरुवार के दिन धर्म और शुद्ध आचरण के विपरीत व्यवहार करने के लिए कहा।

रानी ने साधु की बातों का बाहरी अर्थ समझा और विवेक के बिना वही गलत आचरण अपनाने लगी। कुछ ही गुरुवारों में राजा का धन, संपत्ति और वैभव समाप्त होने लगा। महल की समृद्धि नष्ट हो गई और भोजन की कमी होने लगी।

राजा को परदेश जाना पड़ा

आर्थिक कठिनाई बढ़ने पर राजा ने रानी से कहा, “इस नगर में सभी मुझे जानते हैं। यहां साधारण काम करना कठिन होगा। मैं दूसरे देश में जाकर मेहनत करूंगा और जीविका कमाने का प्रयास करूंगा।”

राजा परदेश चला गया। वहां वह जंगल से लकड़ी काटकर नगर में बेचता और उसी आय से अपना जीवन चलाता था।

इधर रानी और दासी महल में गरीबी से जूझने लगीं। किसी दिन थोड़ा भोजन मिलता और किसी दिन उन्हें केवल जल पीकर रहना पड़ता। एक समय ऐसा आया जब कई दिनों तक घर में अन्न नहीं था।

दासी रानी की बहन के घर गई

रानी ने अपनी दासी से कहा कि पास के नगर में रहने वाली उसकी बहन के घर जाकर कुछ अनाज मांग लाए। संयोग से वह दिन गुरुवार था।

जब दासी वहां पहुंची, तब रानी की बहन बृहस्पतिवार व्रत कथा सुन रही थी। व्रत कथा के दौरान वह एकाग्र होकर बैठी थी, इसलिए उसने दासी के संदेश का तुरंत उत्तर नहीं दिया।

दासी दुखी होकर वापस लौट आई और उसने रानी को सारी बात बताई। रानी को लगा कि विपत्ति में उसकी अपनी बहन ने भी सहायता नहीं की।

कथा और पूजा पूरी होने के बाद रानी की बहन को दासी का ध्यान आया। वह तुरंत रानी के घर पहुंची और बोली, “बहन, मैं गुरुवार व्रत कथा सुन रही थी। इसलिए उस समय बीच में उठकर उत्तर नहीं दे सकी। बताओ, दासी किस काम से आई थी?”

घर में अनाज का घड़ा मिला

रानी ने रोते हुए बताया कि घर में कई दिनों से अन्न नहीं था और दासी सहायता मांगने गई थी। उसकी बहन ने कहा, “बृहस्पति देव श्रद्धा रखने वालों की सहायता करते हैं। पहले अच्छी तरह देखो, शायद घर में कहीं अनाज रखा हो।”

रानी ने दासी को खोजने भेजा। दासी ने घर के एक भाग में अनाज से भरा घड़ा पाया। दोनों आश्चर्यचकित हो गईं।

दासी ने कहा, “जब भोजन न होने के कारण हमें भूखा ही रहना पड़ता है, तब क्यों न हम श्रद्धा से गुरुवार का व्रत करें? आप अपनी बहन से इसकी विधि पूछिए।”

रानी को व्रत की विधि बताई गई

रानी की बहन ने समझाया कि गुरुवार को स्नान करके भगवान विष्णु और बृहस्पति देव की पूजा करनी चाहिए। केले के वृक्ष की जड़ में जल अर्पित करें, चने की दाल, गुड़, मुनक्का, केला और पीले फूल चढ़ाएं। घी का दीपक जलाकर व्रत कथा सुनें और अपनी सामर्थ्य के अनुसार एक समय सात्त्विक भोजन करें।

उसने यह भी कहा कि पूजा केवल भोजन या धन पाने के लिए नहीं, बल्कि अपने व्यवहार को सुधारने, धर्म का पालन करने और जरूरतमंदों की सहायता करने के संकल्प के साथ करनी चाहिए।

बृहस्पति देव ने भोजन भेजा

अगले गुरुवार रानी और दासी ने श्रद्धापूर्वक व्रत रखा। उनके पास बहुत कम सामग्री थी। उन्होंने उपलब्ध चना और गुड़ से भगवान का पूजन किया और कथा सुनी।

पूजा पूरी होने पर उन्हें चिंता हुई कि व्रत खोलने के लिए पीला भोजन कहां से आएगा। तभी बृहस्पति देव ने एक साधारण व्यक्ति का रूप धारण किया और दासी को दो थाल पीला भोजन देकर कहा, “यह भोजन तुम्हारे और तुम्हारी रानी के लिए है।”

रानी और दासी ने भगवान को प्रणाम करके प्रसाद रूप में भोजन ग्रहण किया। इसके बाद वे प्रत्येक गुरुवार श्रद्धापूर्वक व्रत और पूजन करने लगीं। धीरे-धीरे उनके जीवन की परिस्थितियां सुधरने लगीं।

दासी ने धन के सदुपयोग की शिक्षा दी

धन लौटने के बाद रानी फिर आलस्य और सुविधा में डूबने लगी। दासी ने उसे समझाया, “बहुत कठिनाई के बाद हमें यह अवसर मिला है। हमें पिछली भूल दोबारा नहीं करनी चाहिए। धन का उपयोग भूखों को भोजन देने, जल की व्यवस्था करने, जरूरतमंदों की सहायता और अच्छे कार्यों में करना चाहिए।”

रानी को अपनी गलती समझ में आ गई। उसने दान, सेवा और लोककल्याण के कार्य शुरू किए। उसके व्यवहार में विनम्रता आई और परिवार का सम्मान फिर बढ़ने लगा।

राजा के लिए प्रार्थना

एक दिन रानी और दासी को राजा की याद आई। उन्होंने बृहस्पति देव से प्रार्थना की कि राजा जहां भी हो, सुरक्षित लौट आए।

उसी रात बृहस्पति देव ने राजा को स्वप्न में दर्शन देकर कहा, “तुम्हारी रानी तुम्हें याद कर रही है। अब अपने राज्य लौट जाओ।”

अगले दिन राजा जंगल में लकड़ी काटते समय अपनी कठिन परिस्थिति के बारे में सोच रहा था। तभी बृहस्पति देव साधु के रूप में उसके पास आए और उसकी चिंता का कारण पूछा।

राजा ने अपनी पूरी कहानी सुनाई। साधु ने कहा, “तुम्हारी पत्नी से भूल हुई थी, लेकिन अब उसने गुरुवार का व्रत और धर्मपूर्ण आचरण शुरू कर दिया है। तुम भी श्रद्धापूर्वक भगवान विष्णु और बृहस्पति देव की पूजा करो।”

राजा ने कहा कि उसकी आय इतनी कम है कि पूजा सामग्री खरीदना कठिन है। साधु ने समझाया कि सच्ची पूजा के लिए बड़ी व्यवस्था जरूरी नहीं है। अपनी सामर्थ्य के अनुसार थोड़ा चना, गुड़ और केला अर्पित करके कथा सुनो।

राजा को फिर समृद्धि मिली

राजा ने गुरुवार का व्रत करने का संकल्प लिया। उस दिन उसकी लकड़ियां सामान्य से अच्छे मूल्य पर बिकीं। उसने पूजा की थोड़ी सामग्री खरीदी, भगवान का पूजन किया और प्रसाद ग्रहण किया।

कुछ समय बाद राजा अपने राज्य लौट आया। रानी ने अपनी भूल स्वीकार की और राजा ने उसे क्षमा कर दिया। दोनों ने मिलकर दान, धर्म, सेवा और गुरुवार व्रत का पालन किया।

उनके राज्य में फिर सुख और समृद्धि आई। लेकिन अब वे धन को केवल अपना अधिकार न मानकर भगवान की देन और जनकल्याण का साधन समझते थे।

कथा का संदेश: श्रद्धा केवल पूजा तक सीमित नहीं रहनी चाहिए। उसका प्रभाव सत्य, परिश्रम, दान, विनम्रता और धन के सदुपयोग में दिखाई देना चाहिए।

श्री बृहस्पति देव की आरती

जय बृहस्पति देवा,
ॐ जय बृहस्पति देवा।
छिन-छिन भोग लगाऊं,
कदली फल मेवा॥
ॐ जय बृहस्पति देवा॥

तुम पूर्ण परमात्मा,
तुम अंतर्यामी।
जगतपिता जगदीश्वर,
तुम सबके स्वामी॥
ॐ जय बृहस्पति देवा॥

चरणामृत निज निर्मल,
सब पातक हर्ता।
सकल मनोरथ दायक,
कृपा करो भर्ता॥
ॐ जय बृहस्पति देवा॥

तन, मन, धन अर्पण कर,
जो जन शरण धरे।
प्रभु प्रकट तब होकर,
आकर द्वार खड़े॥
ॐ जय बृहस्पति देवा॥

दीनदयाल दयानिधि,
भक्तन हितकारी।
पाप-दोष सब हर्ता,
भव-बंधन हारी॥
ॐ जय बृहस्पति देवा॥

सकल मनोरथ दायक,
सब संशय टारो।
विषय-विकार मिटाओ,
संतन सुखकारी॥
ॐ जय बृहस्पति देवा॥

जो कोई आरती तेरी,
प्रेम सहित गावे।
कष्ट हरो तुम उनके,
मन-इच्छित फल पावे॥
ॐ जय बृहस्पति देवा॥

जय बृहस्पति देवा,
ॐ जय बृहस्पति देवा।
छिन-छिन भोग लगाऊं,
कदली फल मेवा॥
ॐ जय बृहस्पति देवा॥

बृहस्पतिवार व्रत कथा और आरती